आईजीएनसीए में कुठदार बाबा पर वेबिनार का आयोजन

आदि सनातन चेतना के अग्रदूत थे मिक्कु : पद्मश्री अशोक भगत

रांची : भगवान जतरा टाना भगत द्वारा चलाये गये टाना भगत आन्दोलन के प्रभावशाली स्तम्भ एवं विष्णु भगत संप्रदाय के प्रणेता मिक्कु भगत पर आयोजित एक हाईब्रिड वेबीनार को संबोधित करते हुये विकास भारती बिशुनपुर के सचिव पदमश्री अशोक भगत ने कहा कि भारत के विभिन्न कालखण्ड और विभिन्न क्षेत्रों में एकात्मता का बोध कराने और समाज के संवर्द्धन के लिए संतों का प्रदुर्भाव होता रहा है। पदमश्री भगत ने कहा कि कुठदार बाबा ऐसे ही संतों में से एक थे, जिन्होंने आदिवासी समाज को संगठित किया, मजबूत बनाया और देश व समाज के विकास के लिए उन्हें प्रेरित किया। हाईब्रिड मॉड में सम्पन्न वेबीनार इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की क्षेत्रीय शाखा, रांची और विकास भारती बिशुनपुर के संयुक्त तत्वावधान में की गयी।

श्री भगत ने कहा कि मिक्कु भगत न केवल आध्यात्मिक संत थे अपितु उन्होंने भाषा को संमृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मिक्कु भगत जड़ी-बूटीयों के भी माहिर जानकार थे। सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे और अपने सम्प्रदाय के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज में पनपी कुरीतीयों के खिलाफ एक जोरदार आन्दोलन खड़ा किया। उसका प्रभाव आज भी गुमला, लोहरदगा, लातेहार, पलामू, रांची आदि जिलों के सुदूरवर्ती गांवों में देखने को मिलता है। वेबीनार को संबोधित करते हुये आदि सनातन चिंतक भिखारी भगत ने कुठदार बाबा के सम्पूर्ण व्यक्तिव पर विहंगम दृष्टि डाली। उन्होंने कहा कि कुठदार बाबा का जन्म 1994 में हुआ। जब वे अपने जीवन के 13वें वर्ष में प्रवेश किये तो उन्हें भगवान विष्णु का साक्षात्कार हुआ। उसी समय से कुठदार बाबा आदिवासी समाज के उत्थान और विकास के लिए काम करने लगे। भगत ने कहा कि टाना भगत आन्दोलन के अगुवा रहे भगवान जतरा टाना भगत को उस समय की पुलिस ने गिरफतार किया और जेल भेज दिया लेकिन कुठदार बाबा अपनी वैद्य विद्या के कारण थाने के छूट गये। कुठदार बाबा ने अष्टन मंडल बना कर समाज को वैष्णव धारा में दीक्षित किये और समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान किये। स्वतंत्रता आन्दोलन में जमीनी कार्यकर्त्ता तैयार करने में कुठदार बाबा की बड़ी भूमिका थी। भिखारी भगत ने कहा कि उन्होंने अपने मृत्यु से पहले वर्ष 1941 में 168 घण्टों तक चरखा चलाने का रिकॉर्ड बनाया। वर्ष 1952 में जीवन के अंतिम समय में उन्होंने अपने अनुयायियों को कहा कि मुझे खड़ा दफनाना क्योंकि मैं तब तक खड़ा रहूँगा जब तक आदिवासी समाज को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिल जाती। वेबीनार को संबोधित करते हुये वरिष्ठ पत्रकार गौतम चौधरी ने देश की सनातन संस्कृति, एकात्मबोध, आदिवासी समाज की भूमिका, आदिवासी संतो का योगदान आदि विषयों पर प्रकाश डाला। चौधरी ने कहा कि आदिवासी समाज इस देश की मुख्यधारा का समाज है, सनातन चिंतन का अगुवा है, प्रकृति पूजक है, पर्यावरण संरक्षक है। हमें नयी पिढ़ी को अपने पारम्परिक ज्ञान, संनातन आदर्श, समाज के संत एवं सनातन की तकनीक को हस्तान्तरित करने की जरूरत है।

वेबीनार का संचालन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के रांची शाखा निदेशक डॉ॰ कुमार संजय झा ने किया। वहीं वेबीनार में आये अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यक्रम संयोजिका बोलो कुमारी उरांव ने किया। कार्यक्रम में सुनील तिग्गा, सुमेधा सेनगुप्ता, डॉ॰ प्रदीप मुण्डा आदि कई गणयमान्य उपस्थित थे।

'मिक्कू भगत ने किया था आदिवासी समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ जोरदार आंदोलन'

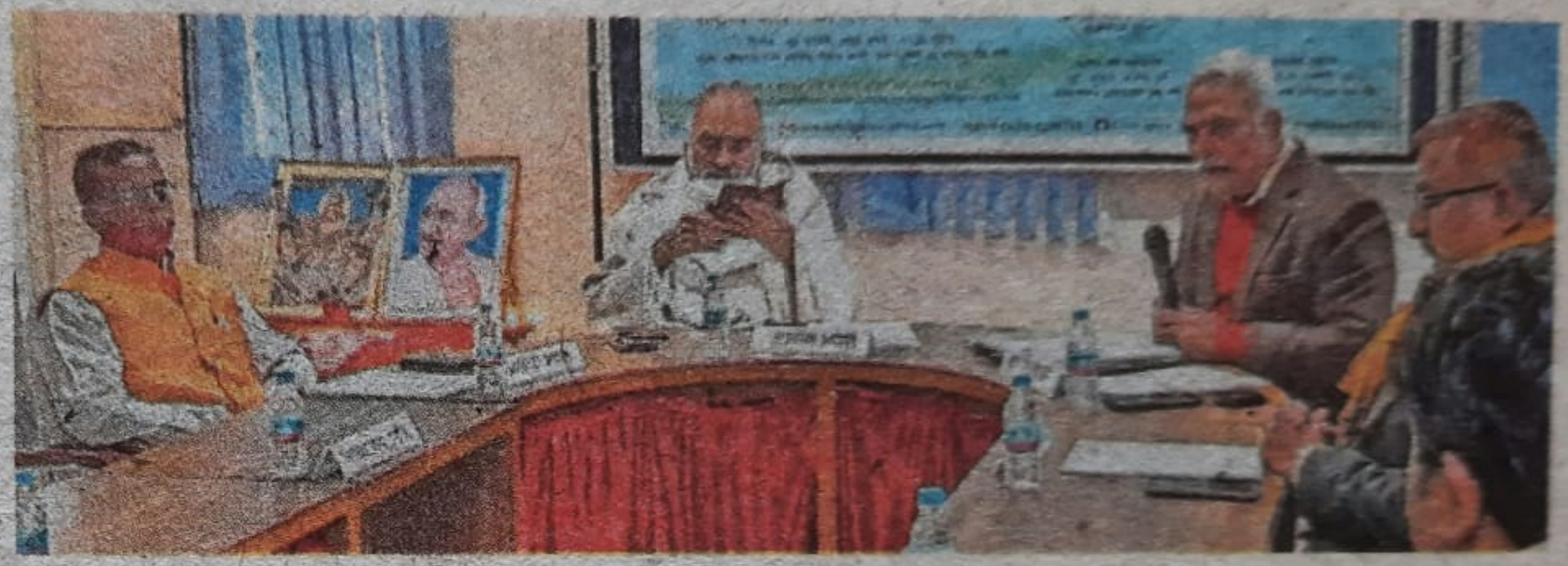

कार्यक्रम में शामिल पद्मश्री अशोक भगत (बाएं से दूसरे) व अन्य • जागरण

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की क्षेत्रीय शाखा व विकास भारती की ओर से टाना भगत और विष्णु भगत संप्रदाय पर हुआ वेबिनार

जासं, रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की क्षेत्रीय शाखा और विकास भारती बिशुनपुर की ओर से वेबिनार का आयोजन किया गया। जतरा टाना भगत द्वारा चलाए गए टाना भगत आंदोलन के प्रभावशाली स्तंभ एवं विष्णु भगत संप्रदाय के प्रणेता मिक्कू भगत पर आयोजित वेबिनार को संबोधित करते हुए विकास भारती बिशुनपुर के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि भारत के विभिन्न कालखंड और विभिन्न क्षेत्रों में एकात्मता का बोध कराने और समाज के संवर्द्धन के लिए संतों का प्रदुर्भाव होता रहा है। पद्मश्री भगत ने कहा कि कुठदार बाबा ऐसे ही संतों में से एक थे। जिन्होंने आदिवासी समाज को संगठित किया, मजबूत बनाया और देश व समाज के विकास के लिए उन्हें प्रेरित किया। अशोक भगत ने कहा कि मिक्कू भगत न केवल आध्यात्मिक संत थे अपितु उन्होंने भाषा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मिक्कू भगत जड़ी-बूटीयों के भी जानकार थे। सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। अपने संप्रदाय के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज में पनपी कुरीतियों के खिलाफ एक जोरदार आंदोलन किया। उसका प्रभाव गुमला, लोहरदगा, लातेहार, पलामू, रांची आदि जिलों के सुदूरवर्ती गांवों में देखने को मिलता है। वेबिनार का संचालन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद के रांची शाखा निदेशक डा. कुमार संजय झा ने किया। वहीं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम की संयोजिका बोलो कुमारी उरांव ने किया। कार्यक्रम में सुनील, सुमेधा, डा प्रदीप मुंडा आदि उपस्थित थे।